



गेंदा पुष्प उत्पादन की तकनीक एवं आय हिमालय जैवसंपदा प्रौद्योगिकी संस्थान, पालमपुर (हि.प्र.)

गेंदा पुष्प उत्पादन

गेंदा का उत्पत्ति स्थल मैक्सिको एवं दक्षिणी अमेरिका को माना जाता है। इसकी खेती विभिन्न प्रकार की जलवायु एवं मृदा में सफलता पूर्वक होने, पुष्पन की अधिक अवधि, सुन्दर पुष्प एवं इसके पुष्प का जीवन काल अच्छा होने के कारण इसकी ख्याति दिन-प्रतिदिन बढ़ती जा रही है। मुख्य तौर पर इसकी तीन प्रजातियाँ *टैज़ेटिस इरेक्टा*



गेंदा पुष्प उत्पादन

(अफ्रीकन गेंदा), *टै. पेटुला* (फ्रेंच गेंदा) और *टै. माइन्वूटा* (जंगली गेंदा) का इस्तेमाल विभिन्न उद्देश्यों के लिए किया जाता है। अफ्रीकन एवं फ्रेंच गेंदा के फूलों का इस्तेमाल माला बनाने, पार्टी या विवाह के पण्डाल को सजाने, विवाह में गाड़ी की सजावट तथा धार्मिक स्थलों में पूजा हेतु प्रयुक्त किया जाता है। इसके अतिरिक्त इसे

गमलों एवं क्यारियों में लगा कर बागवानी, घर, पार्क इत्यादि जगहों को अलंकृत किया जाता है। अफ्रीकन गेंदा की कुछ प्रजातियाँ जिनकी पुष्प डण्डी लम्बी होती हैं, उनके पुष्पों को डण्डी के साथ काट कर घर के अन्दर गुलदस्तों में लगा कर सजावट हेतु प्रयोग किया जाता है। पिछले कुछ वर्षों में दक्षिण भारत में अफ्रीकन गेंदा का क्षेत्रफल इसके फूलों की पंखुड़ियों से प्रसंस्करण विधि द्वारा कैरोटिनोएड्स निकालने के कारण बढ़ा है तथा कैरोटिनाएड्स

प्रजातियाँ

अफ्रीकन गेंदा

पूसा नारंगी गेंदा, पूसा बसंती गेंदा, एप्रीकाट, क्रैकर जेक, क्राउन आफ गोल्ड, डब्लन, फायर ग्लो, जायन्ट सनसेट, गोल्डेन जुबली, गोल्डेन येलो, गोल्डस्मिथ, मैन ऑफ द मून, ओरेंज जुबली, रिवर साइड, सन जायन्ट, सुपर चीफ डबल येलोस्टोन इत्यादि।

एफ 1 हाइब्रिड

अपोलो, क्लाइमैक्स, फस्ट लेडी, गोल्ड लेडी, ओरेंज लेडी, इन्का येलो, इन्का गोल्ड, इन्का ओरेंज इत्यादि।

फ्रेंच गेंदा

सिंगल : सन्नी, टेटा रफल्ड रेड, लीजन आफ आनर इत्यादि।

डबल : बोलेरो, बोनीता, बटरस्कोच, कार्मेन, क्यूपीड येलो, हारमोनी, लेमनड्राप, मैलोडी, ओरेंज लैम, रस्टी रेड, स्प्रे, स्पून येलो इत्यादि।

का अधिकांश इस्तेमाल पोल्ट्री फीड (मुर्गी का दाना) में किया जा रहा है। इस प्रकार का पोल्ट्री फीड मुर्गी को खिलाने से उनके अण्डे के योक एवं मांस का रंग पीला हो जाता है। ऐसे अण्डों एवं मांस की मांग बाजारों में अधिक है। दक्षिण भारत से कैरोटिनोएड्स मैक्सिको को लगातार निर्यात किया जा रहा है।

जंगली गेंदा के पौधों से प्रसंस्करण विधि द्वारा सुगन्धित तेल निकाला जाता है। जंगली गेंदा दक्षिण पश्चिमी हिमालय में 1000 से 2500 मीटर समुद्र तल की ऊंचाई तक हिमाचल प्रदेश, उत्तराखण्ड एवं जम्मू-कश्मीर के विभिन्न भागों में जंगली तौर पर पाया जाता है तथा इस क्षेत्र के कुछ किसान व्यवसायिक फसल के तौर पर इसकी खेती भी कर रहे हैं। फ्रांस, केनिया और आस्ट्रेलिया मुख्य तौर पर जंगली गेंदा से तेल निकालने का कार्य बड़े पैमाने पर कर रहे हैं। उपरोक्त इस्तेमाल के अतिरिक्त गेंदा का प्रयोग इनके पंखुड़ियों के रस को आंख के रोग एवं अल्सर के निदान हेतु भी किया जाता है।

गेंदा की खेती करने से खेत में निमैटोड का प्रकोप बहुत कम हो जाता है। हिमालय जैवसंपदा प्रौद्योगिकी संस्थान, पालमपुर (हि.प्र.) पिछले कुछ वर्षों से गेंदा की पुष्प उत्पादन की तकनीक (निःशुल्क) एवं गुणवत्ता युक्त बीज किसानों को उचित मूल्य पर उपलब्ध करवा रहा है।

अफ्रीकन एवं फ्रेंच गेंदा की खेती भारतवर्ष के कुछ हिस्से के अतिरिक्त हर भाग में होती है। निचली पहाड़ी क्षेत्रों में गेंदा के पुष्प का उत्पादन, उस समय होता है जब मैदानी क्षेत्रों में (गर्मी का मौसम) इसका उत्पादन घट जाता है लेकिन मांग बढ़ जाती है। गर्मी के मौसम में मैदानी क्षेत्रों में इसके पुष्प उत्पादन की लागत अधिक सिंचाई करने के कारण बढ़ जाती है। इस प्रकार किसान एवं पुष्प उत्पादक इस लेख की तकनीकी जानकारी से गेंदा की अच्छी गुणवत्ता युक्त, अधिक पुष्प की उपज प्राप्त कर सकते हैं। अतः यह तकनीकी फोल्डर बहुत से पुष्प उत्पादकों एवं किसानों को कृषि विविधिकरण एवं आर्थिक आय को बढ़ाने में लाभकारी सिद्ध हो सकता है।

जलवायु

अफ्रीकन एवं फ्रेंच गेंदा अन्य मौसमी फूलों जैसा नहीं है कि वर्ष में एक बार ही पुष्प उत्पादन करेगा, बल्कि यह विभिन्न समय पर पौध रोपण करने पर लगभग वर्ष भर पुष्पोत्पादन करता रहता है। खुला स्थान जहाँ पर सूर्य की

रोशनी सुबह से शाम तक रहती हो, ऐसे स्थान पर गेंदा की खेती सफलतापूर्वक की जा सकती है। छायादार स्थानों पर इसका पुष्प उत्पादन की उपज बहुत कम हो जाती है एवं गुणवत्ता भी घट जाती है। शीतोष्ण जलवायु को छोड़ कर अन्य जलवायु में इसकी खेती लगभग वर्ष भर की जा सकती है। शीतोष्ण जलवायु में इसका पुष्पोत्पादन केवल गर्मी के मौसम में किया जा सकता है।

प्रवर्धन

गेंदा का प्रवर्धन बीज तथा वानस्पतिक भाग शाखा से कलम विधि द्वारा किया जाता है। वानस्पतिक विधि द्वारा प्रवर्धन करने से पौधे पैतृक जैसे ही उत्पादित होते हैं। व्यवसायिक स्तर पर गेंदा का प्रवर्धन बीज द्वारा किया जाता है। इसका 800 ग्राम से 1 किलोग्राम बीज प्रति हैक्टेयर की दर से लगता है। गेंदा का प्रवर्धन कलम विधि द्वारा करने के लिए 6-8 सेंमी. लम्बी कलम पौधे के उपरी भाग से लेते हैं। पौधे से कलम को अलग करने के उपरान्त कलम के निचले हिस्से से 3-4 सेंमी. तक की सभी पत्तियों को



गेंदा का बीज

ब्लेड से काट देते हैं तथा कलम के निचले भाग को तिरछा काटते हैं। इसके बाद कलम को बालू में 2-3 सेंमी. गहराई पर लगा देते हैं। कलम को बालू में लगा देने के 20-25 दिन बाद कलम में जड़ें बन जाती हैं। इस प्रकार वानस्पतिक प्रवर्धन विधि से पौधा बन कर रोपण हेतु तैयार हो जाता है।

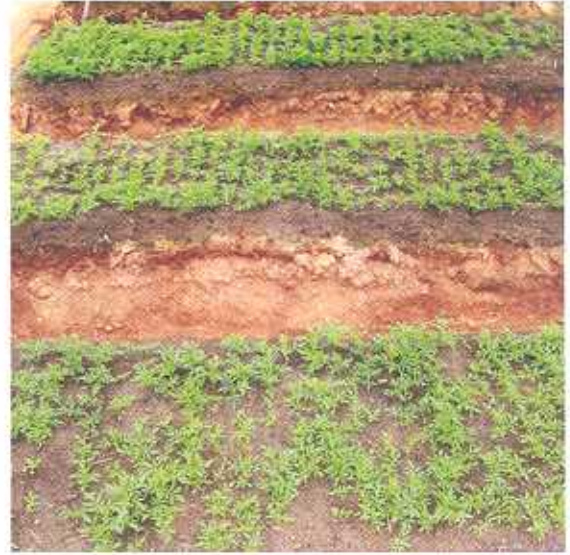
मिट्टी तथा क्यारी की तैयारी

गेंदा की खेती लगभग हर प्रकार के मिट्टी में की जा सकती है। बलुई दोमट मिट्टी जिसका पी. एच. मान 6.5-7.5 के बीच हो तथा जीवांश पदार्थ की प्रचूर मात्रा के साथ-साथ जल निकास का उचित प्रबन्ध हो, सर्वोत्तम पायी गई है। क्यारी बनाने से पहले मिट्टी को लगभग 30 सेंमी. गहरी खुदाई करके भुरभुरा तथा खरपतवार रहित कर लेते हैं। रासायनिक उर्वरक एवं गोबर की सड़ी खाद आवश्यकतानुसार मिट्टी में डालकर 15-20 सेंमी. गहराई तक अच्छी तरह मिला देते हैं। क्यारी की चौड़ाई एवं लम्बाई सिंचाई का साधन एवं खेत के आकार पर निर्भर करता है। खेत समतल होने पर क्यारी लम्बी एवं चौड़ी बनानी चाहिए लेकिन खेत नीच ऊंच होने पर क्यारी का आकार छोटा रखना चाहिए। अच्छी तरह तैयार भुरभुरी मिट्टी में 2-3 मीटर चौड़ा तथा सुविधानुसार लम्बी क्यारी बनाना चाहिए। दो क्यारियों के बीच में 1-1.5 फीट चौड़ा मेड़ (बण्ड) रखना चाहिए।

नर्सरी की क्यारी की तैयारी एवं बीज की बुवाई

गेंदा की पौध तैयार करने के लिए सामान्य तौर पर 1 मीटर चौड़ा तथा 15-20 सेंमी. ज़मीन की सतह से ऊंची क्यारी बनाते हैं। दो क्यारियों के बीच में 30-40 सेंमी. का फासला छोड़ देते हैं, जिससे सुगमतापूर्वक नर्सरी में खरपतवार निकाई तथा क्यारी से पौधों को रोपण हेतु निकाला जा सके। नर्सरी की क्यारी की मिट्टी अच्छी तरह भुरभुरी करके

मिट्टी में सड़ी हुई गोबर की खाद 10-12 किलोग्राम प्रति वर्गमीटर के दर से मिला देते हैं। यदि बलुई दोमट मिट्टी न हो तो क्यारी में आवश्यकतानुसार बालू की मात्रा भी मिला देते हैं। क्यारी में बीज की बुवाई से पहले 2 ग्राम कैप्टान प्रति लीटर पानी में घोल कर सभी क्यारियों में ड़ेच कर देना चाहिए, इससे नर्सरी में कवक का प्रकोप कम हो जाता है जिसके कारण बीज के अंकुरण के बाद पौधों की मृत्यु दर कम हो जाती है। क्यारी में बीज की बुवाई दो पंक्तियों के बीच में 6-8 सेंमी. का फासला रखते हुए 1.5-2 सेंमी. की गहराई पर करनी चाहिए। पंक्तियों में बीज पास-पास नहीं रखना चाहिए क्योंकि पास-पास बीज की बुवाई करने से पौध कमजोर हो जाती हैं जिससे पुष्प उत्पादन भी कम होता है। बीज की बुवाई के बाद सड़ी पत्ती की खाद या बालू की पतली परत क्यारी के उपर बिछा देना चाहिए। ऐसा करने से क्यारी में नमी बनी रहती है एवं बीज का अंकुरण भी अधिक होता है। क्यारियों में गर्मी के मौसम में सुबह-शाम तथा जाड़ा एवं बरसात के मौसम में सुबह पानी प्रतिदिन फुहारा से देना चाहिए। गर्मी के मौसम का पुष्पोत्पादन करने हेतु फरवरी माह के दूसरे सप्ताह तथा वर्षा ऋतु के समय पुष्पोत्पादन हेतु जून के पहले सप्ताह में बीज की बुवाई करनी चाहिए। जाड़ा के मौसम का पुष्पोत्पादन हेतु सितम्बर माह के दूसरे सप्ताह में बीज की बुवाई करनी चाहिए।



नर्सरी



नर्सरी में रोपण हेतु तैयार पौध

पौध रोपण

नर्सरी में बीज की बुवाई के एक माह बाद पौध रोपण हेतु तैयार हो जाती है। अफ्रीकन गेंदा 40x40 सेंमी. तथा फ्रेंच 30x30 सेंमी. पौध से पौध एवं पंक्ति से पंक्ति के फांसले पर 4-5 सेंमी. गहराई पर लगाना चाहिए। पौध रोपण गर्मी के मौसम में सांयकाल तथा जाड़ा एवं बरसात में पूरे दिन किया जा सकता है। पौध रोपण के समय यदि पौध लम्बा हो गया हो तो लगाने से पहले उसका शीर्षनोचन कर देना चाहिए।

खाद एवं उर्वरक

गोबर की सड़ी खाद 200-250 क्विंटल प्रति हैक्टेयर की दर से डालना चाहिए। इसके अतिरिक्त रासायनिक उर्वरकों द्वारा 200 किलोग्राम प्रति हैक्टेयर नत्रजन और 80 किलोग्राम फास्फोरस एवं पोटाश देने से पुष्पोत्पादन बढ़ जाता है। फास्फोरस एवं पोटाश की पूरी मात्रा हेतु सिंगल सुपरफास्फेट तथा म्यूरेट आफ पोटाश को क्यारी की

तैयारी के समय मिट्टी में मिला देना चाहिए। नत्रजन की मात्रा को तीन बराबर भाग में बंट कर एक भाग क्यारी की तैयारी के समय एवं दो भाग पौध रोपण से 30 एवं 60 दिन पर यूरिया या कैल्शियम अमोनियम नाइट्रेट उर्वरक द्वारा देना चाहिए।

सिंचाई एवं जल निकासी

गेंदा की खेती में पौधों की बढ़वार एवं पुष्पोत्पादन में सिंचाई का विशेष महत्व है। सिंचाई के पानी का पी. एच. मान 6.5 - 7.5 तक लाभकारी पाया गया है। पौध रोपण के तुरन्त बाद सिंचाई खुली नाली विधि से की जाती है। मृदा में अच्छी नमी होने से जड़ों की अच्छी वृद्धि एवं विकास होता है, तथा पौधों को मिट्टी में उपलब्ध पोषक तत्व उचित मात्रा में मिलता रहता है। शुष्क मौसम में सिंचाई पर विशेष ध्यान देना चाहिए। गर्मी में 5-6 दिन तथा जाड़ा में 8-10 दिन के अन्तराल पर सिंचाई करनी चाहिए। क्यारियों में पानी का जमाव नहीं होना चाहिए। बरसात में अत्याधिक पानी के निकासी के लिए जल निकास नाली पहले से तैयार रखनी चाहिए।

खरपतवार निकासी एवं गुड़ाई

खरपतवार जब छोटा रहे उसी समय खेत से बाहर निकाल देना चाहिए। पौधों की छोटी अवस्था में समय पर मिट्टी की गुड़ाई करनी चाहिए। ऐसा करने से मिट्टी भुरभुरी बनी रहती है और जड़ों की अच्छी वृद्धि एवं विकास होता है। मिट्टी की गुड़ाई बहुत गहरी नहीं करनी चाहिए।



अफ्रीकन गेंदा के एफ 1 पौधों में पुष्पन

शीर्षनोचन

शीर्षनोचन पौधा की फैलाव को बढ़ाने के लिए किया जाता है। शीर्षनोचन दो बार करने से पुष्पोत्पादन बढ़ जाता है। यदि पौध रोपण बिलम्ब से किया गया हो तो केवल प्रथम शीर्षनोचन करना चाहिए।

प्रथम

पौध रोपण के समय यदि पौधों का शीर्षनोचन न किया गया हो तो पौध लगाने के 12-15 दिन बाद उन प्रत्येक पौधा का शीर्षनोचन हाथ से करना चाहिए जिनकी लम्बाई जमीन की सतह से 15 सेंमी. से अधिक हो गयी हो। शीर्षनोचन के समय यह ध्यान रखा जाता है कि शीर्षनोचन के उपरान्त पौध पर 4 से 5 पूर्ण विकसित पत्तियाँ बनी रहें। ऐसा करने से एक पौध पर 3 से 5 तक मुख्य शाखाएं आ जाती हैं। शाखाओं की संख्या बढ़ने पर पुष्पोत्पादन बढ़ जाता है।

द्वितीय

प्रथम शीर्षनोचन जैसा ही द्वितीय शीर्षनोचन करते हैं। इसमें मुख्य शाखाएं जब 15-20 सेंमी. लम्बी हो जाती हैं, उस समय हर शाखा पर 4-5 पूर्ण विकसित पत्तियाँ छोड़कर शीर्षनोचन कर देते हैं।

कीट

रेड स्पाइडर माइट

माइट गेंदा की पत्तियों का रस चूस लेते हैं। जिससे पत्तियाँ हरे रंग से भूरे रंग में बदलने लगती हैं तथा पौधों की बढ़वार बिल्कुल रुक जाती है। इसका अत्याधिक प्रकोप होने पर पुष्पोत्पादन भी नहीं हो पाता, जो कलियाँ बनती भी हैं, वह खिल भी नहीं पाती हैं। इसकी रोकथाम के लिए हिल्फोल 1.0 मिलीलीटर प्रति लीटर पानी में घोल कर छिड़काव करना चाहिए।

एफिड्स

एफिड्स रस चूसने वाला कीट है। इनका प्रकोप पत्तियों, टहनियों एवं पुष्प कलियों पर होता है। यह पौधे की वृद्धि को कम कर देता है। इसकी रोकथाम के लिए मैलाथियान या इण्डोसल्फान का छिड़काव 2.0 मिलीलीटर प्रति लीटर पानी में घोलकर करना चाहिए।

लीफमाइनर

लीफमाइनर नर एवं मादा दोनों पौधों को नुकसान पहुंचाते हैं। गेंदा में इसका प्रकोप होने पर पत्तियों में सफेद धारियाँ बन जाती हैं एवं पौधों की बढ़वार कम हो जाती है। इसकी रोकथाम के लिए 1.5-2 मिलीलीटर इण्डोसल्फान प्रति लीटर पानी में घोल कर छिड़काव करना चाहिए।

कैंटरपिलर

कैंटरपिलर हरा एवं भूरा काले रंग का कीट है। यह पत्तियों, टहनियों एवं कलियों को नुकसान पहुंचाते हैं। इसकी रोकथाम के लिए 1.5 मिलीलीटर इण्डोसल्फान या मैलाथियान एक लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करना चाहिए।



प्रजाति पूसा नारंगी में पुष्पन

रोग

डैमपिंग आफ

यह बीमारी *राइजोक्टोनिया सोलेनाई* कवक का प्रकोप होने पर नर्सरी में होती है। इस बीमारी का प्रकोप होने पर नर्सरी में ही पौधों की मृत्यु हो जाती है। अधिकतर यह बीमारी नर्सरी में पौधों को बहुत अधिक पानी देने के कारण होती है। इसकी रोकथाम के लिए क्यारी में बीज की बुवाई करने से पहले क्यारी में किसी भी कापर कवकनाशी (कैप्टान) का घोल (0.2 प्रतिशत सान्द्रता) का ड्रिप करना चाहिए या मिट्टी को फार्मलडीहाइड नामक रसायन के घोल (2 प्रतिशत सान्द्रता) से संक्रमित कर देना चाहिए। इस बीमारी का प्रकोप होने के बाद निदान करना बहुत ही कठिन है।

फ्लावर बड-रॉट

यह बीमारी अधिक आर्द्रता वाले क्षेत्र में देखा गया है। इस बीमारी में कलियों पर ब्राउन धब्बे पड़ जाते हैं। इस प्रकार

की कलियाँ पूर्ण रूप से खिल नहीं पाती हैं। इसकी रोकथाम के लिए डाइथेन एम-45 का 0.2 प्रतिशत सान्द्रता के घोल का छिड़काव करना चाहिए।

कालर रॉट, फूट रॉट एवं रूट रॉट

यह बीमारियाँ *राइजोक्टोनिया सोलेनाई*, *फाइटोफ्थोरा स्पेशीज*, *पीथियम स्पेशीज*, इत्यादि कवकों के कारण होती है। कालर रॉट पौधे की किसी अवस्था में देखा जा सकता है। फूट रॉट एवं रूट रॉट अधिक आर्द्रता वाले क्षेत्र में तथा क्यारी में अधिक पानी होने के कारण भी अधिकतर पाई जाती है। इसकी रोकथाम के लिए नर्सरी की मिट्टी को बीज की बुवाई से पहले फार्मलडीहाइड की घोल से संक्रमित करें, रोग रहित बीज का प्रयोग करें, रोगग्रसित पौधों को उखाड़ दें, बहुत घना नर्सरी या पौध रोपण न करें तथा बुवाई से पहले कैप्टान से बीज को उपचारित करें।



प्रजाति पूसा नारंगी में पूर्ण खिले पुष्प

लीफ स्याट

यह बीमारी *अल्टरनेरिया टैजेटिका* कवक के प्रकोप होने पर गेंदा के पौधों पर देखा गया है। इस बीमारी से प्रभावित पौधों के पत्तियों के ऊपर भूरा गोल धब्बा दिखने लगता है, जो धीरे-धीरे पौधों की पत्तियों को खराब करता है। इस बीमारी की रोकथाम के लिए बाविस्टीन 1-1.5 ग्राम पाउडर प्रति लीटर पानी में घोलकर पौधों पर छिड़काव करना चाहिए।

पाउडरी मिल्ड्यू

गेंदा में पाउडरी मिल्ड्यू *ओडियम स्पेशीज* और *लेविल्लुला टैरिका* कवकों के प्रकोप होने के कारण होता है। इस बीमारी में पौधों के पत्तियों के ऊपर सफेद पाउडर दिखाई देने लगता है। कुछ समय बाद पूरे पौधे पर सफेद पाउडर दिखने लगता है। इसकी रोकथाम के लिए कैराथेन 1.0 मिलीलीटर प्रति लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करना चाहिए।

विषाणु रोग

विषाणु पौधों की गुणवत्ता को धीरे धीरे कम कर देते हैं। गेंदा में *कुकुम्बर मोज़ैक* वाइरस का प्रकोप देखा गया है। विषाणु रोग के बचाव के लिए रोगग्रसित पौधों को समय-समय पर उखाड़ कर जमीन के अन्दर दबा दें या जला देना चाहिए।

पुष्पों की तुड़ाई एवं उपज

गर्मी के मौसम की फसल मई माह के मध्य से शुरू होकर बरसात के समय तक चलती है। लेकिन यह देखा गया है कि जून में सर्वाधिक पुष्प उत्पादन होता है। बरसात के मौसम की फसल में फूलों का उत्पादन सितम्बर मध्य से शुरू होकर लगातार दिसम्बर तक तथा जाड़ा के मौसम की फसल जनवरी मध्य से शुरू होकर मार्च तक लगातार

पुष्पोत्पादन होता रहता है। पहाड़ी क्षेत्रों में गर्मी एवं बरसात की फसल सफलतापूर्वक उगाई जा सकती है। पुष्पों को पौध से तब अलग करते हैं जब पुष्प पूर्ण रूप से खिल जाए। फूलों को तोड़ते समय यह ध्यान रखा जाता है कि पुष्प के नीचे लगभग 0.5 सेंमी. तक लम्बा हरा डण्डल पुष्प से जुड़ा रहे। पुष्पों की तुड़ाई सुबह के समय करना चाहिए तथा किसी ठण्डे स्थान पर रखना चाहिए। यदि पुष्प के ऊपर अतिरिक्त नमी या पानी की बूंद हो तो उसे छायादार स्थान पर फैला देना चाहिए। नमी कम हो जाने के बाद बांस की टोकरी में बाजार में भेज दिया जाता है। यदि फूलों को अतिरिक्त नमी के साथ पैक करने पर पुष्प की पंखुड़ियाँ काली पड़ने लगती हैं। इसी कारण ऐसे फूलों की कीमत बाजार में बहुत कम मिलती है। यदि सही तरीके से इसके फसल पर ध्यान दिया गया हो तो अफ्रीकन गेंदा 200-250 क्विंटल तथा फ्रेंच गेंदा से 100-125 क्विंटल प्रति हैक्टेयर पुष्प की उपज प्राप्त होती है।



गेंदा पुष्प

लागत एवं आय

एक हैक्टेयर (10000 वर्गमीटर) क्षेत्रफल में गेंदा की खेती करने से फूलों को बाजार में बेचने तक किसान भाई को औसतन 1,00,000 रुपये खर्च करने पड़ते हैं। कुल आय लगभग 2,00,000 रुपये हो सकती है। इस प्रकार शुद्ध आय (कुल आय - कुल लागत = शुद्ध आय) 1,00,000 रुपये प्रति हैक्टेयर हो सकती है। यह अन्य बहुत से फसलों से अधिक है। इस प्रकार किसानों की आर्थिक स्थिति मजबूत हो सकती है।

भारत की कृषि आधारित अर्थव्यवस्था में पुष्पोत्पादन दिन प्रतिदिन एक महत्वपूर्ण घटक बनता जा रहा है। पिछले दो दशक में पुष्प फसलों का क्षेत्रफल और उत्पादन में सराहनीय प्रगति हुई है। भारत में वर्ष 2005-06 में राष्ट्रीय बागवानी बोर्ड, भारत सरकार द्वारा अनुमानित लगभग 1 लाख हैक्टेयर क्षेत्रफल में पुष्प की फसलें उगाई जाती हैं। यह क्षेत्रफल घरेलू एवं विदेशी बाजारों में पुष्प की मांग बढ़ने के कारण बढ़ता जा रहा है। बागवानी के क्षेत्र में किसान भाई फल एवं सब्जी के फसलों की अपेक्षाकृत फूलों की खेती से प्रति इकाई क्षेत्रफल से अधिक शुद्ध आमदनी प्राप्त कर रहे हैं। गेंदा पुष्प फसल की एक बड़ी विशेषता है कि लगभग वर्ष भर इसकी खेती की जा सकती है। इतना ही नहीं, यह विभिन्न प्रकार की जलवायु में विभिन्न समय पर पुष्पोत्पादन करता रहता है।

अधिक जानकारी के लिए संपर्क करें

डा. परमवीर सिंह आहूजा
निदेशक

हिमालय जैवसंपदा प्रौद्योगिकी संस्थान
पो. बॉ. नं. 6, पालमपुर-176061
हिमाचल प्रदेश

फोन 01894-230411 फैक्स 230433

ई मेल - director@ihbt.res.in

वेबसाइट - www://ihbt.res.in

लेखन, संपादन एवं अनुवादन
डा. एम.के. सिंह एवं संजय कुमार